रेक्स डी रोज़ारियो

स्लमडॉग करोड़पति

अमिताभ बच्चन की एक फिल्म थी – *दीवार*। *दीवार* दो भाइयों की कहानी थी जिनके पिता एक सरगना के हाथों मारे जाते हैं। दोनों भाइयों में से एक बड़ा होकर डराने-धमकाने वाला दादा बनता है और दूसरा, एक ईमानदार पुलिस अफसर।

स्लमडॉग मिलेनियर (हिन्दी में *स्लमडॉग करोड़पति)* के हीरो जमाल मलिक का अमिताभ बच्चन को भारत का सबसे मशहूर शख्स मानना मुझे महज़ संयोग नहीं लगता। अमिताभ के पीछ जमाल की दीवानगी इतनी ज़्यादा है कि उसके ऑटोग्राफ लेने के लिए वो सार्वजनिक शौचालय के गड्ढे तक में कूद जाता है। हालाँकि *स्लमडॉग मिलेनियर* विकास स्वरूप के उपन्यास Q&A (सवाल-जवाब) पर बनी फिल्म है लेकिन मुझे तो यह बार-बार अमिताभ की 80 के दशक की फिल्मों की याद दिलाती रही।

दीवार ही की तरह इसमें एक भाई है – सलीम – कुछ-कुछ पगलाया सा। जो ताकत और पैसों की अपनी भूख को पूरा करने के लिए अपराध की दुनिया में घुस गया है वो। दूसरा भाई – जमाल – अपनी मासूमियत और अपने विश्वासों को अब भी अपने पास रखे हुए है। जीवन में मिले इतने ज़्यादा कष्टों के बाद भी।

स्लमडॉग कहानी है एक सताए हुए बच्चे की जिसने जीवन में आई हर मुश्किल का सामना किया और झोपड़पट्टी से महलों तक पहुँच गया। *स्लमडॉग* दो शब्दों "स्लम" (झुग्गी) और "अण्डर डॉग"

(जिससे किसी को कोई उम्मीद नहीं) से मिलकर बना है।

जमाल एक अनाथ बच्चा है। वो एक लड़की से प्रेम करता है। उसे पाने के लिए वो टेलिविज़न के एक शो "कौन बनेगा करोड़पति" में हिस्सा लेता है। और उसे मिलते हैं – दो करोड़ रुपए और उसका प्यार।

पर कॉल सेंटर में चाय बाँटने वाले बिना पढ़े-लिखे लड़के को "कौन बनेगा करोड़पति" में पूछे सवालों के जवाब कैसे आते हैं? फिल्म यही कहानी बताती है। कार्यक्रम में पूछे हर सवाल का जवाब जमाल की ज़िन्दगी में घटी किसी दुखद घटना से जुड़ा है। जमाल ने अपने आसपास से उसके साथ घटी चीज़ों से ही सीखा है। हाँ, यह इत्तेफाक ज़रूर है कि लगभग सारे सवाल उसके जीवन से इस कदर जुड़े हैं। पर यही तो परी कथा है!

जमाल और सलीम मुम्बई की झुग्गियों में कितना कुछ देखते हुए पलते-बढ़ते हैं – हिन्दू-मुस्लिम दंगों में अपनी माँ को मरते देखा, बच्चों को अपंग करके उनसे भीख मँगवाने वाले दरिंदों को चकमा देकर भाग खड़े हुए वो, इस महानगर में अपनी सूझबूझ, चतुराई से जिए हैं वो। *बंटी और बबली* फिल्म के बंटी और बबली की ही तरह। यह परी कथा है जमाल के प्रेम की। धोखे, खून, शोषण के बीच उसे ढूँढ निकालने के सफर की। हर पल उठते, बढ़ते, बदलते शहर मुम्बई की, जहाँ झुग्गियाँ पाँव पसारती ऊँची-ऊँची इमारतों को जगह दे रही हैं। और कॉल सेंटर लोगों की ज़िन्दगियाँ बदल रहे हैं। फिर भी अपराध यहाँ फल-फूल रहा है, अन्दर ही अन्दर...। फिल्म किस खूबसूरती से इन सबकी गवाह बनी है!

और उसे कैसे भूला जा सकता है। वो एकमात्र सवाल जिसका जवाब जमाल के पास नहीं है – भारतीय नोट पर बने अशोक स्तम्भ के नीचे क्या लिखा है? जमाल नहीं जानता कि "सत्यमेव जयते" क्या होता है। उसे ज़िन्दगी ने नहीं सिखाया कि सच की जीत होती है। अपने जीवन में तो उसने छलाव, झूठ-फरेब के रास्ते ही जीत हासिल होते देखा है। फिर भी उसका अपना जीवन सच और भरोसे की जीत की कहानी है!

लोग कहते हैं कि *स्लमडॉग* एक ब्रिटिश फिल्म है जो भारत की गरीबी और झुग्गीबस्तियों को दिखाती है। वैसे ही जैसे टेलिविज़न पर रिएलिटी शो दिखाते हैं। वे यह भी कहते हैं कि फिल्म बनाने वालों ने भारत की गरीबी को पश्चिम के लोगों के सामने भुनाने की कोशिश की है। लेकिन मैं नहीं मानता इसे। मेरे लिए तो *स्लमडॉग* दुनियाभर के सच को दिखाती एक सुन्दर फिल्म है। हॉलीवुड और बॉलीवुड दोनों का मिला-जुला रूप है यह – हमारी फिल्मों का अतिरेक है

स्माइल पिंकी एक डॉक्युमेन्ट्री फिल्म है जिसे ऑस्कर के लिए नामांकित किया गया है। *स्माइल पिंकी* उत्तरप्रदेश के मिर्ज़ापुर ज़िले की आठ साल की एक ऐसी लड़की की कहानी है जिसके होंठ और तालू कटे हुए थे।

इसमें पर तराशा इसे पश्चिम की छुरी से गया है।

इस बात को रहमान का संगीत और पुख्ता करता है। रहमान के संगीत में भारतीय और पश्चिमी दोनों संगीतों का अद्भुत मेल है। फिल्म में वे इंसानी आवाज़ों को साज़ के रूप में राग, रैप, हिपहॉप और दूसरी बीट्स के साथ मिलाकर इस तरह का ज़बरदस्त संगीत पैदा करते हैं कि फिल्म का हर मूड – तनाव, डर, प्यार, दिल को छू लेना, उम्मीद – महसूस होने लगता है।

एक अच्छी परी कथा, बुराई पर अच्छाई की, प्यार की जीत की फिल्म है *स्लमडॉग मिलेनियर*। लेकिन बावजूद इसके फिल्म बनाने वालों ने हमारे समाज के बारे में कुछ तीखी टिप्पणियाँ की हैं जिनसे बचा जा सकता था।

फिल्म में "कौन बनेगा करोड़पति" को संचालित करने वाले प्रेम कुमार का व्यवहार बताता है कि स्लमडॉग के लिए एक और भी शब्द हो सकता है – गली का कुत्ता। अधिकाँश दुनिया झुग्गी में रहने वालों को इसी नज़र से देखती है। और उन्हें हमेशा वहीं देखना चाहती है।

चलते-चलते फिल्म हमारी शिक्षा व्यवस्था पर भी टिप्पणी करना नहीं भूलती। एक जवाब जो स्कूल में पढ़ाए जाने के बावजूद जमाल ने नहीं सीखा था वो था *तीन मसखरे* (एक उपन्यास) में तीसरे मसखरे का नाम। यह बताता है कि स्कूल की पढ़ाई बच्चे के जीवन से कितनी कटी हुई है (आखिर सरकारी स्कूल के एक बच्चे को तीन मसखरों के नामों को पढ़ने की, रटने की ज़रूरत क्या है) और वहाँ सचमुच कितना कम सीखा जाता है।